आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 7 March 2022 **Website**: www.shivbabas.org

धारणा - *रॉयल कुल में जाने के लिए आज अपने प्योरीटी को बढ़ाने का पुरुषार्थ करे*

भगवानुवाच ...

किसी भी कार्य, प्रोग्राम, कोई भी सेवा हम करते है, उसकी आधार है **प्योरीटी की पार्सोनालीटि**। हमारी प्योरीटी हमारी सबसे बड़ी पार्सोनालीटि है।

हम जानते है हम जब देवता थे, हमारी पार्सोनालीटि कैसी थी! जब देव रूप में हमारा पूजन हुआ हमारे जड़ चित्र की भी पार्सोनालीटि कैसी थी?

हमारा व्यक्तित्व बहुत महान है। संसार को आकर्षित करनेवाला है। एक रॉयल व्यक्ति की पार्सोनालीटि सबको आकर्षित करता है। उसका चलना, बोलना, देखना, खाना-पीना, उठना, बैठना, व्यवहार में आना सब आकर्षण का केंद्र बने रहते है।

लेकिन हमारी व्यक्तित्व का आधार है हमारी **प्योरीटी।** हमारी **पवित्र दृष्टि**। जो भी हमारे सामने आये उसे हमसे पवित्र वायब्रेशन्स मिलते रहे। यह इस महान ईश्वरीय कार्य में बहुत बड़ा योगदान होगा।

हम अपने **प्योरीटी की पार्सोनालीटि** को बढ़ाते चले। हमारे चेहरे पर आंतरिक प्रसन्नता, आंतरिक सन्तोष की झलक दिखाई दे। हमारे सम्पूर्ण प्योरीटी का यह प्रैक्टिकल स्वरुप होगा आंतरिक **सन्तुष्टि** और आंतरिक **प्रसन्नता।**

बाहरी प्रसन्नता तो आपेही चेहरे से झलकेगी। लेकिन हमारे चित बहुत प्रसन्न हो। मन आनन्द से भरपूर हो गये हो। हमारा दिल गाता हो कि ....

" **तुम्हें सबकुछ मिल गया जिसकी तुम्हे जन्म जन्म से तलाश थी** .. तुमने वह सबकुछ पा लिया जो तुम्हें पाना चाहिए था .. तुमने उन सभी खजानों से स्वयं को भरपूर कर लिया जो जन्म जन्म तुम्हारे काम आयेंगे .. तुमने अपना भाग्य बहुत ही उज्वल कर लिया "

हमारी दिल से यह आवाज निकले और प्रभु मिलन के बाद ईश्वरीय अनुभूतियों के बाद आत्मा सम्पूर्ण रूप से तृप्त हो गई हो।

तो हमारे **संतुष्टता का प्रकाश** हमारी प्योरीटी की पार्सोनालीटि बनकर चारों ओर फैलेगा। और संसार की आत्माओं को आकर्षित करेगा।

हम कोई भी सेवा करते है, चाहे प्रोग्राम बनाते है, चाहे किसी से मिलने जाते है यदि तेरे-मेरे का भाव है, यदि स्वार्थ का भाव है ....

मैं ही यह सेवा करूँ दुसरे का नाम न हो जाये .. केवल मेरा नाम हो .. इस सेवा के योग्य केवल मैं हूँ .. इस सेवा के ड्यूटी केवल मुझे मिली हुई है .. इसलिए दुसरे को करने का अधिकार नहीं है...

अगर यह भावना है तो समझ ले प्योरीटी की पार्सोनालीटि बहुत डाउन है। और हम सेवा तो कर लेंगे, नाम भी हो जायेगा। लेकिन **सफलता** जो संसार को दिखाई दे वह कदापि प्राप्त नहीं होगी।

इसलिए हम सभी व्यर्थ संकल्पों से, स्वार्थ की भावनाओं से परे हो जाये। यह स्वार्थ भी असन्तोष का प्रतीक है। यह स्वार्थ भी एक बड़ी सूक्ष्म इम्पुरीटी है। स्वार्थ भाव बाबा की कार्य में बहुत बड़ी बाँधा है।

और स्वार्थ से सेवा करने के बाद उसके पुण्य भी जमा नहीं होता। क्योंकि उसका तत्काल फल मिल जाता है। मान और सम्मान जिसे बाबा कहते है ...

" वो कच्चा फल खा लेते है "

तो आईये आज हम सारा दिन याद रखे ....

" मैं पवित्रता का सूर्य हूँ "

आज का यह स्वमान रहेगा। और ....

" मेरे मस्तक पवित्रता का तेज चारों और फैल रहा है सूर्य की तरह "

और ....

" हमारे सिर के ऊपर है ज्ञान सूर्य .. उनके किरणें निरन्तर मुझमें समा कर चारों ओर फैल रहे है "

और यह किरणें संसार से इम्पुरीटी के कीटाणुओं को नष्ट कर रही है।

तो आज सारा दिन इसी अनुभवों में और धुन में रहेंगे।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org